पाठ - 11

EZIZI6

अशोक महान

कान में पड़ी आवाज नहीं सुनाई दे रही थी। नगाड़े बज रहे थे। घोड़े हिनहिना रहे थे। हाथी चिंघाड़ रहे थे। तलवारों की झंकार से दिल दहल रहे थे। घायल रो रहे थे। चारों तरफ शोर ही शोर था। कोई किसी को पूछने वाला न था। सबको अपनी-अपनी पड़ी थी। जिधर देखिये खून ही खून। खोपड़ियाँ लुढ़क रही थीं। कटी गरदनों, भुजाओं और टाँगों की कोई गिनती न थी। चारों ओर बस लाशें ही लाशें थीं। जमीन पर पड़ी और खून में लथपथ लाशें।

अचानक विजय की दुंदुभी बज उठी। सम्राट अशोक की जय-जयकार होने लगी। अशोक ने कलिंग पर चढ़ाई कर उसे जीत लिया था, परन्तु कितनी मँहगी पड़ी थी यह जीत। लगभग एक लाख लोग मारे गए और एक लाख पचास हजार बन्दी बनाए गए थे।

अशोक ने युद्ध में मारे गये सिपाहियों को देखा। रोती-बिलखती स्त्रियों और बच्चों को देखा। उनका हृदय द्रवित हो उठा, उसने निर्णय लिया कि अब मैं कभी भी तलवार न उठाऊँगा। उसने लोगों के मन को प्रेम से जीता। यह हृदय द्वारा हृदय की जीत थी। यह विजय स्थायी थी। यह प्रेम और शान्ति की नीति थी। प्रेम के द्वारा उसने इतने बड़े राष्ट्र को एक शासन के सूत्र में बाँध दिया था। इस नीति ने भारत को विश्व में बहुत ऊँचा स्थान दिलाया। इसी कारण अशोक को महान कहा जाता है।

अशोक प्रजा को अपनी सन्तान के समान समझने लगा। वह दीन-दुखियों, वृद्धों और अपाहिजों का ध्यान रखता और सभी से प्रेमपूर्ण व्यवहार करता था। वह पशुओं पर दया करता था। राज्य के अधिकारियों को उसके आदेश थे कि प्रजा की सुरक्षा का सदैव ध्यान रखें और अपने कर्त्तव्य का निष्ठा से पालन करें।

अशोक बौद्ध था परन्तु वह सभी धर्मों का आदर करता था। वह सदाचार की शिक्षा देता था। यही उसका धर्म था जिसमें मन की पवित्रता थी, सदाचार था, वाणी की मृदुता थी, हँसी-खुशी रहने की बात थी, दयालुता का व्यवहार था, क्रोध से दूर रहने की सीख थी, घमण्ड की मनाही थी और ईर्ष्या से बचाव था।

अशोक ने बौद्ध धर्म का प्रचार किया। जो बौद्ध धर्म के अनुयायी नहीं थे उनके साथ भी प्रेम का व्यवहार करता था। धर्म प्रचार के लिए उसने, साम्राज्य के सुदूर भागों मंे प्रचारक भेजे। इसके अतिरिक्त उसने बौद्ध धर्म का प्रचार विदेशों में भी किया। सिंहल द्वीप, चीन और जापान आदि देशों में भी प्रचारक भेजे। उसने अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को भी धर्म का प्रचार करने के लिए भेजा।

अशोक ने बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों और उपदेशों को शिलाओं, स्तम्भों और गुफाओं में अंकित कराया जिससे वे जनसाधारण तक पहुँच सकें। गौतम बुद्ध के जन्म-स्थान लुम्बिनी वन में भी एक लाट लगवाई। हमारे राष्ट्र ध्वज के मध्य का चक्र सारनाथ के अशोक स्तम्भ से ही लिया गया है।

प्राचीन भारत के शासकों में अशोक का स्थान बहुत ऊँचा है। अशोक महान के कार्य अपनी पीढ़ी और युग से आगे थे। यदि हम उन्हें 'युग पुरुष' कहें तो अतिशयोक्ति न होगी।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1.सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद युद्ध न करने का निश्चय क्यों किया ?
2.अशोक के संदेशों को संक्षेप में लिखिए।
3.अशोक ने बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों और उपदेशों को जनमानस तक कैसे पहुँचाया ?
4.अशोक को जीत क्यों मँहगी पड़ी ?
5.अशोक को युग पुरुष कहना क्यों उचित है ?

6.सही तथ्यों के सामने सही (√) तथा गलत के सामने गलत (x) का निशान लगाएँ।

(क)अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद कभी युद्ध न करने का निर्णय लिया।
(ख)अशोक बौद्ध था, परन्तु वह सभी धर्मों का आदर नहीं करता था।
(ग)अशोक ने सिंहल द्वीप, चीन, जापान आदि देशों में प्रचारक भेजे थे।
(घ) हमारे राष्ट्र ध्वज के मध्य का चक्र सारनाथ के अशोक स्तंभ से लिया गया है।